+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(भारतीय ज्ञान परंपरा)

(January 2025)

(Part III)

TOPICS TO BE COVERED

- भारतीय दर्शन के माध्यम से पर्यावरण संबंधी जागरूकता
- कोणार्क सूर्य मंदिर: महानदी डेल्टा पर आश्चर्यजनक भू-विरासत
- भारत के ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (GCC) के हाथों में आगामी वैश्विक क्रांति का नेतृत्व

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारतीय दर्शन के माध्यम से पर्यावरण संबंधी जागरूकता:

परिचय:

- एक रिपोर्ट के अनुसार, 2024 के पहले नौ महीनों में भारत में मौसम के अत्यधिक उतार-चढ़ाव ने तीन हजार से ज्यादा लोगों की मौत और आधारभूत ढांचे तथा कृषि क्षेत्र को भारी नुकसान पहुंचाया। इस अवधि के 93 प्रतिशत दिनों में मौसम चरम पर था। मध्यप्रदेश में सबसे ज्यादा घटनाएं हुईं और केरल में सबसे ज्यादा जानें गईं।

- इसी रिपोर्ट में आपदा प्रबंधन को सुधारने और उच्च उत्सर्जन को नियंत्रित करने की आवश्यकता जताई गई। इस समय पर्यावरणीय संकटों के बीच पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने, जिसमे मानव गतिविधियों और पर्यावरण के बीच टिकाऊ संबंधों को समझने के लिए लोगों और समुदायों को प्रेरित करने की बहुत आवश्यकता है।

- उल्लेखनीय है कि भारतीय दर्शन अपनी समृद्ध परंपरा के जरिए इस जागरूकता को बढ़ावा देने में मदद करता है, जो सभी जीवों के परस्पर संबंधों और प्रकृति के प्रति मानव के नैतिक दायित्वों पर जोर देता है।

भारतीय दर्शन में मनुष्य और पर्यावरण में परस्पर निर्भरता:

- भारतीय दर्शन की विचारधारा में पर्यावरण को जड़ न मानकर क्रियाशील और परस्पर जुड़ी हुई व्यवस्था माना गया है, जिसमें मानव सभी अन्य प्राणियों और जीवों के संग मिलकर रहते हैं।
- इस दृष्टिकोण से समग्र प्राकृत जगत को समझने और इससे संबंध स्थापित करने की सोच को बल मिलता है, जिसमें स्वयं को परिस्थितियों के अनुरूप ढालने को प्राथमिकता दी जाती है। इसमें पर्यावरण की मूल प्रकृति को जान-समझ कर पर्यावरण संरक्षण को मनुष्य का मूल दायित्व बताया है।
- भारतीय दर्शन के अनुसार अन्य भौतिक पदार्थों की भांति मानव भी - पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, अग्नि, समय, दिशाएं, मस्तिष्क और मृदा आदि तत्वों के मेल से निर्मित है और मृत्यु के बाद इन सभी तत्वों का विखंडन हो जाता है।

- उल्लेखनीय है कि भारतीय दर्शन में पर्यावरण में जैविक और अजैविक दोनों स्वरूपों में जीवन रहता है। साथ ही इसके घटकों में परस्पर निर्भरता सर्वोपरि सिद्धांत है जिसमे अकेला-अस्तित्व संभव नहीं है।

भारत में पर्यावरण-संबंधी नैतिकता का ऐतिहासिक संदर्भ:

- भारतीय संस्कृति में प्राचीन ग्रंथों और संतों के उपदेशों के माध्यम से पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण की परंपरा रही है, जो गहरे नैतिक मूल्यों पर आधारित थी। इन सिद्धांतों ने दैनिक जीवन और शासकों के कार्यों को प्रभावित किया, और छोटे से छोटे पर्यावरणीय मुद्दों के समाधान खोजे गए। प्राचीन और मध्यकालीन भारत में प्रकृति के प्रति गहरी आस्था और पूज्य भाव था, और पर्यावरण से जुड़े नैतिक मूल्य जीवन के हर पहलू में शामिल थे। दार्शनिक पद्धतियों और आध्यात्मिक गुरुओं ने पर्यावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने की शिक्षा दी।
- तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में अशोक काल के राज्यादेशों में पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण साक्ष्य मिलते हैं। इन शिलालेखों में हरे वृक्षों के काटने पर प्रतिबंध और दोषियों को दंडित करने की व्यवस्था का उल्लेख है, जो वनों की कटाई और पर्यावरणीय प्रदूषण से जुड़ी समस्याओं के प्रति जागरूकता को दर्शाता है। बिहार के

रामपुरवा में मिले 243 ईसा पूर्व के राज्यादेश संख्या 5 में पर्यावरण संरक्षण की नीतियों का विस्तार से वर्णन है, जिसमें संरक्षित प्रजातियों की सूची और उनकी हानि करने पर निषेध लगाया गया है। यह राज्यादेश वनों का संरक्षण और यहां तक की मछलियों के प्रजनन काल में सुरक्षा पर भी जोर देता है, जो उस समय के पर्यावरणीय जागरूकता को स्पष्ट रूप से दिखाता है।

भारतीय दर्शनशास्त्र में मानव-प्रकृति का पावन संबंध:

- भारतीय दर्शनशास्त्र में प्रकृति का संसाधनों के लिए सिर्फ दोहन नहीं, बल्कि इसे एक पवित्र और पूजनीय व्यवस्था के रूप में देखा गया है। वेदों में वर्णित वैश्विक विचारधारा के अनुसार, प्राकृतिक जगत को ईश्वर से अभिन्न माना गया है।
- इस दृष्टिकोण में पर्यावरण के प्रति दायित्व की भावना को महत्व दिया गया है और सभी को प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाए रखने का आह्वान किया गया है।
- **वृक्ष और उनका देवी-देवताओं से संबंध:**

  ➢ **अशोक का वृक्ष:** बुद्ध, इन्द्र, विष्णु, अदिति।

  ➢ **पीपल का वृक्ष:** भगवान विष्णु, देवी लक्ष्मी, देवी वन दुर्गा।

  ➢ **तुलसी का वृक्ष:** भगवान विष्णु, भगवान कृष्ण, भगवान जगन्नाथ, देवी लक्ष्मी।

➢ **कदम्ब का वृक्ष:** भगवान कृष्ण।

➢ **बेर का वृक्ष:** भगवान शिव, देवी दुर्गा, भगवान सूर्य, देवी लक्ष्मी।

➢ **वट का वृक्ष:** भगवान ब्रह्मा, भगवान विष्णु, भगवान शिव, भगवान काल (यम देव), भगवान कुबेर, भगवान कृष्ण।

- पाश्चात्य परम्पराओं में अक्सर मानव-केंद्रित विचारधारा, जो प्रकृति को मूलतः मानव उपयोग का संसाधन माना जाता है, के विपरीत भारतीय दर्शन में अवतारवाद के माध्यम से अमानव जगत का भी महत्व स्वीकार किया गया है तथा पशुओं और पेड़-पौधों में भी मानव जैसे गुण होने की धारणा व्यक्त की गई है। उदाहरणस्वरूप पशुपति महादेव सरीखी पूजा-पद्धति और पंचतंत्र की कहानियों में वर्णित नैतिक मूल्यों के द्वारा यही तथ्य सामने आता है। गायों और वृक्षों का पूजन और देवी-देवताओं का पशुओं के साथ सहचर्य भी जीवों के सूक्ष्म महत्व को दर्शाता है।
- भारतीय दर्शन में मानवता और प्रकृति के बीच सद्भाव को विशेष महत्व दिया गया है, जिसमें मानव को प्रकृति का अभिन्न हिस्सा माना जाता है। यह विचारधारा ब्रह्मांड को एक जीवित व्यवस्था मानती है, जिसमें जड़ और चेतन सभी प्राणी आपस में जुड़े होते हैं। बौद्ध विचारधारा में सभी जीवों के प्रति प्रेम और सम्मान का

भाव पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रेरणा देता है, जबकि जैन धर्म में सभी प्राणियों, पेड़-पौधों और मनुष्यों में आत्मा की समानता मानकर उनके प्रति आदर रखने की शिक्षा दी जाती है।

- सांख्य दर्शन पुरुष (दृष्टा) और प्रकृति की धारणा मानता है। योग परंपरा इसी विचार को और आगे बढ़ाते हुए प्रकृति के साथ गहन संबंध विकसित करने और सभी लोगों को प्राकृतिक जगत के साथ समन्वय रखते हुए जीने के लिए प्रोत्साहित करती है।
- उपनिषदों में मानव और पर्यावरण के संबंधों की विवेचना की गई है। उपनिषदों के अनुसार पांच मूल तत्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ही जीवन के मुख्य आधार हैं जो मानव अस्तित्व को ब्रह्मांड से जोड़ते हैं। छांदोग्य उपनिषद कहता है- "पृथ्वी सभी प्राणियों का आधार तत्व है"।

पर्यावरण जागरूकता के नैतिक आयाम:

- भारतीय दार्शनिक परम्पराओं में अन्य प्रजातियों के प्रति नैतिक आचरण और दायित्व भाव रखने पर बल दिया गया है। यह नैतिक व्यवस्था अहिंसा और करुणा जैसे सिद्धान्तों पर आधारित है जिनमें सभी जीवधारियों के प्रति सम्मानपूर्वक व्यवहार रखने को प्राथमिकता दी जाती है।

- प्राचीन भारतीय शास्त्रों में दीर्घकाल से ही पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर जोर दिया गया है। इनमें कालिदास रचित नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिसकी पात्र शकुन्तला प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंधों को चित्रित करती है और प्रकृति को पालनकर्ता मां के रूप में देखती है।
- 'धर्म' या कर्तव्य की अवधारणा में पर्यावरण-जागरूकता को आकार देने में बहुत अहम भूमिका है। इससे लोगों को पर्यावरण के प्रति अपने दायित्व निभाने की प्रेरणा मिलती है। इससे दीर्घकालिक पद्धतियां अपनाने की प्रेरणा प्राप्त होती है।
- 'कर्म' की अवधारणा में मानव कार्यों के परिणामों पर बल दिया जाता है और पर्यावरण जागरूकता की आवश्यकता पर भी जोर दिया जाता है। हिन्दू लोग पृथ्वी के अस्तित्व को पावन-पवित्र मानते हैं।
- भारत की स्वदेशी संस्कृतियों में गहरी पर्यावरण-जागरुकता निहित है जिसके तहत प्रकृति को जीवन्त अस्तित्व माना जाता है न कि ऐसी वस्तु जिस पर अपना नियंत्रण बनाया जा सके।

निष्कर्ष:

- भारतीय दर्शन की अंतर्दृष्टि आधुनिक जीवन की जटिलताओं से निपटने के लिए एक टिकाऊ और संतुलित अस्तित्व की ओर मार्गदर्शन कर सकती है। इसमें अंतर-

संबंध, नैतिक दायित्व और सभी जीवों के प्रति आदरभाव को महत्वपूर्ण माना गया है, जो पर्यावरणीय और सामाजिक संकटों से निपटने में मददगार हैं।

- वर्तमान समाज में इस प्राचीन ज्ञान को पुनः जाग्रत करके इसे हमारे आधुनिक जीवन में समाविष्ट करना ही बड़ी चुनौती है। हमें इन प्राचीन ज्ञान पद्धतियों को पुनः जाग्रत करके और अपने जीवन में समाहित करके पर्यावरण का संरक्षण और भावी पीढ़ियों के लिए उज्जवल भविष्य सुनिश्चित करना होगा।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

कोणार्क सूर्य मंदिर: महानदी डेल्टा पर आश्चर्यजनक भू-विरासत

परिचय:

- ओडिशा में भारत के पूर्वी तट पर स्थित कोणार्क का सूर्य मंदिर एक वास्तुशिल्प चमत्कार और यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है। 13वीं शताब्दी में निर्मित, यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है, यह अपनी जटिल नक्काशी तथा अद्वितीय डिजाइन के लिए प्रसिद्ध है जो एक विशाल रथ जैसा दिखता है।

- यह मंदिर न केवल एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल के रूप में है, बल्कि प्राचीन भारतीय सभ्यता की उन्नत इंजीनियरिंग और कलात्मक कौशल का एक प्रमाण भी है।

कोणार्क सूर्य मंदिर के संरक्षण प्रयासों का विवरण:

- इस लेख में कोणार्क सूर्य मंदिर के दस्तावेजीकरण और संरक्षण प्रयासों का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसमें उपयोग की जाने वाली विधियों, स्थल का मानचित्रण, जलवायु, भूवैज्ञानिक डेटा और लुप्त नदियों का अध्ययन शामिल है। तुलनात्मक

अध्ययन के माध्यम से मंदिर के निर्माण और गिरावट के कारणों का विश्लेषण किया गया है।

- उल्लेखनीय है कि कोणार्क सूर्य मंदिर को विश्व धरोहर स्थल के रूप में संरक्षित करने के लिए मानचित्रण किया गया, जिसमें संरक्षित और निषिद्ध क्षेत्रों की पहचान की गई। प्रमुख फोकस मंदिर की जीवित संरचना, जगमोहन, की सुरक्षा पर था, और भविष्य में इसे बचाने के लिए उपायों की योजना बनाई गई।
- पुरी जिले का ऐतिहासिक, पौराणिक और धार्मिक महत्व भी बताया गया है, साथ ही संरचना के संरक्षण के लिए विभिन्न पहलुओं, जैसे पेड़ लगाने और अभयारण्य की स्थापना, को कवर किया गया है।

कोणार्क सूर्य मंदिर क्षेत्र का भू-वैज्ञानिक पहलू:

- पुरी जिले की भूवैज्ञानिक संरचना में आर्कियन युग के खोंडालाइट पत्थर का एक छोटा हिस्सा और प्लेइस्टोसिन से वर्तमान तक के चतुर्धातुक तलछट का मोटा ढेर शामिल है।
- कोणार्क सूर्य मंदिर के निर्माण में इन भूवैज्ञानिक विशेषताओं का महत्वपूर्ण योगदान है, विशेष रूप से विभिन्न प्रकार के पत्थरों की उपलब्धता, जैसे खोंडलाइट

(स्थायित्व के कारण संरचनात्मक तत्वों के लिए), लेटराइट (नींव के लिए) और क्लोराइट (जटिल नक्काशी के लिए)।

- इस क्षेत्र की जलोढ़ निक्षेपों ने परिदृश्य को आकार दिया और भूवैज्ञानिक अध्ययन से संकेत मिलता है कि नदी के मार्गों में परिवर्तन और तलछट जमाव ने साइट की स्थिरता पर प्रभाव डाला है।

कोणार्क मंदिर क्षेत्र का नदी तंत्र:

- पुरी क्षेत्र की स्थलाकृति मुख्य रूप से समतल मैदान है, जिसमें तटीय रेतीली और जलोढ़ मिट्टी शामिल है। यह क्षेत्र महानदी नदी बेसिन में स्थित है, और यहां की मुख्य जल निकासी दया, देवी, कुश भद्रा, भार्गवी और प्राची नदियों द्वारा होती है।
- ये नदियां अपने पुराने स्तर पर पहुंच चुकी हैं और समुद्र या चिल्का झील में गिरने वाली सहायक नदियों की शाखाएं बना रही हैं, जो बंगाल की खाड़ी से पहले अलग हुई एक खाड़ी है।

कोणार्क सूर्य मंदिर में प्रयुक्त पत्थरों के स्रोत:

- कोणार्क सूर्य मंदिर के निर्माण में विभिन्न विशेषज्ञों और प्रक्रियाओं का योगदान था, जैसे स्थापक (वास्तुकार-पुजारी), स्थापति (डिजाइनिंग वास्तुकार), सूत्रग्राहिन

(सर्वेक्षक), तक्षक (मूर्तिकार) और वर्धाकिन (निर्माता-प्लास्टर-चित्रकार)। निर्माण में शिल्पशास्त्र ग्रंथों का पालन किया गया और पत्थरों की खुदाई, निर्माण सामग्री का संग्रह, साइट चयन, नींव रखना, और नक्काशी जैसे चरण शामिल थे।

- इस मंदिर के निर्माण में मुख्य रूप से तीन प्रकार के पत्थरों का उपयोग किया गया: लैटेराइट, खोंडालाइट और अल्ट्रा-बेसिक (क्लोराइट), जिसमें खोंडालाइट प्रमुख था।

कोणार्क सूर्य मंदिर के निर्माण का ऐतिहासिक संदर्भ:

- कोणार्क सूर्य मंदिर का निर्माण 1250 ईस्वी के आसपास पूर्वी गंगा राजवंश के राजा नरसिम्हदेव प्रथम द्वारा कराया गया था, जो मुस्लिम आक्रमणकारियों पर उनकी विजय और भगवान सूर्य के सम्मान में किया गया। मंदिर के निर्माण में हजारों कारीगर और मजदूर शामिल थे।
- यह स्थल पौराणिक महत्व से जुड़ा है, और स्थानीय किंवदंतियों के अनुसार इसके निर्माण का श्रेय दैवीय प्रेरणा को दिया जाता है। उल्लेखनीय है कि गंगा राजवंश के राजा नरसिम्हा प्रथम सूर्य भगवान के बहुत बड़े भक्त नहीं थे। इसलिए इस मंदिर के निर्माण के पीछे का कारण काफी अटकलों का विषय बन गया है, जो इसके निर्माण के विभिन्न सिद्धांतों को जन्म देती हैं।

- एक सिद्धांत कहता है कि मंदिर के निर्माण से पहले, त्वचा रोग पैदा करने वाले सूर्य धब्बों में असामान्य वृद्धि हुई थी, जिसके कारण सूर्य पूजा लोकप्रिय हो गई। उस दौरान हुआ सूर्य का पूर्ण ग्रहण ईश्वर के प्रति समर्पण व्यक्त करने के लिए इसके निर्माण का एक कारण हो सकता है। एक दृष्टिकोण यह है कि राजा नरसिम्हा प्रथम स्वयं कुष्ठ रोग से पीड़ित थे और जब वह सूर्य देव की कृपा से इस रोग से ठीक हो गये तो उन्होंने कृतज्ञता में एक मंदिर बनवाया। वहीं कुछ सिद्धांत कहते हैं कि जब सूर्यदेव के वरदान से उन्हें एक पुत्र का वरदान मिला तो उन्होंने कृतज्ञता वश यह मंदिर बनवाया। उनके बेटे का नाम भानु रखना इसका समर्थन करता नजर आता है।

कोणार्क सूर्य मंदिर के लिए उसी स्थल को क्यों चुना गया?

- कोणार्क सूर्य मंदिर का स्थल दूसरी शताब्दी (ई.पू.) जितना पुराना है और महानदी डेल्टा के विकास में आंशिक रूप से महानदी नदी के अंतर्गत कवर किया गया था।
- उल्लेखनीय है कि ऐतिहासिक शोध के आधार पर यह माना जाता है कि महानदी और प्राची नदी उस समय निर्माण सामग्री के परिवहन के लिए बहुत महत्वपूर्ण चैनल होने के साथ-साथ पवित्र नदियां भी मानी जाती थीं। चंद्रभागा नदी, जिसे

उस समय त्वचा रोगों से ठीक करने के गुण के कारण पवित्र माना जाता था और इसी तरह से इस स्थल का स्थान तय किया गया था।

- यह स्थल जंगली पहाड़ी श्रृंखलाओं के भी करीब है, जहां मंदिर परिसर में व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली निर्माण सामग्री जैसे खोंडालाइट, लेटराइट, क्लोराइट और ईंटें मौजूद हैं।

कोणार्क सूर्य मंदिर की स्थापत्य शैली:

- कोणार्क सूर्य मंदिर की स्थापत्य शैली कलिंग वास्तुकला और द्रविड़ प्रभावों का एक उल्लेखनीय मिश्रण है।
- मंदिर को बारह जोड़ी पहियों वाले एक विशाल रथ के रूप में डिजाइन किया गया है, जो समय के बीतने और आकाश में सूर्य की गति का प्रतीक है। प्रत्येक पहिया जटिल नक्काशी से सुसज्जित है। मंदिर के गर्भगृह में सूर्य की एक विशाल मूर्ति है, जो मूल रूप से काले ग्रेनाइट से बनी है, और पर्यावरणीय कारकों के कारण अब खराब हो गई है।
- मंदिर के निर्माण में अपनाई गई निर्माण तकनीक उल्लेखनीय है। ऐतिहासिक वृत्तांतों और पुरातात्विक अध्ययनों के अनुसार, महानदी पर लकड़ी के रोलर्स और राफ्टों से युक्त नवीन तरीकों का उपयोग करके पास की खदानों से बड़े पत्थरों का

परिवहन किया जाता था। इससे न केवल परिवहन बल्कि निर्माण के दौरान पत्थरों को सटीक ढंग से रखने में भी सुविधा हुई।

- खोंडालाइट, लेटराइट और क्लोराइट जैसी स्थानीय सामग्रियों का उपयोग क्षेत्रीय भूविज्ञान और संसाधन प्रबंधन की समझ को दर्शाता है।

वातावरणीय कारकों से कोणार्क सूर्य मंदिर के संरक्षण का प्रयास:

- कोणार्क सूर्य मंदिर जैसे प्राचीन धरोहरों की वातावरणीय कारकों से रक्षा के लिए हमें टिकाऊ उपायों को अपनाने की आवश्यकता है। इसके लिए जरूरी है कि हम गहन शोध और अध्ययन के माध्यम से संरक्षण की प्रभावी रणनीतियाँ तैयार करें, जो सांस्कृतिक धरोहर और पर्यावरणीय संतुलन दोनों का ख्याल रखें।
- हालांकि पर्यावरणीय संकट और मानवीय गतिविधियों के कारण कई चुनौतियां सामने आती हैं, फिर भी इन धरोहरों को सुरक्षित रखने के लिए निरंतर संरक्षण कार्यों की आवश्यकता है, ताकि कोणार्क सूर्य मंदिर की यह धरोहर आने वाली पीढ़ियों के लिए बनी रहे। यह पहल न सिर्फ भारतीय संस्कृति के प्रति हमारी समझ को गहरा करती है, बल्कि हमारे सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा की सामूहिक जिम्मेदारी को भी स्पष्ट करती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत के ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (GCC) के हाथों में आगामी वैश्विक क्रांति का नेतृत्व:

परिचय:

- भारत में 1,800 वैश्विक क्षमता केंद्र यानी ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (GCC) हैं, जो विश्व भर के कुल केन्द्रों की संख्या के लिहाज से आधे से अधिक हैं। इससे यह बात स्पष्ट है कि भारत ने वैश्विक क्षमता केंद्र (GCC) की राजधानी के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत किया है।

ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (GCC) केंद्र क्या होते हैं?

- वैश्विक क्षमता केंद्र (GCC) पूरे विश्व की कंपनियों से जुड़े विभिन्न कार्यों की देखरेख करने वाले कैप्टिव हब के रूप में अनेक प्रकार की गतिविधियों के लिए काम करते हैं।
- इन गतिविधियों में एनालिटिक्स, प्रौद्योगिकी संबंधी समर्थन, उत्पाद विकास और नवाचार शामिल हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत ने GCC के संदर्भ में एक प्रमुख गंतव्य स्थल:

- उल्लेखनीय है कि भारत ने वैश्विक क्षमता केंद्रों (GCC) के संदर्भ में एक प्रमुख गंतव्य के रूप में खुद को स्थापित कर लिया है। विश्व भर में अपने समकक्ष अर्थव्यवस्था वाले देशों की तुलना में इसने बेहतर प्रदर्शन किया है।
- देश में 19 लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिलने से वैश्विक स्तर पर उच्च मूल्य वाली सेवाएं देने की भारत की क्षमता में उछाल आया है।
- नैसकॉम-KPMG की रिपोर्ट के अनुसार, इस क्षेत्र के बाजार के कारोबार 2014-15 के 19.6 अरब डॉलर से बढ़कर 2022-23 में 60 अरब डॉलर हो गया है।
- GCC के लिए एक वैश्विक केंद्र के रूप में इसका उदय महज एक संयोग नहीं है। यह एक सुव्यवस्थित रणनीति का परिणाम है, जो सफल रही है।

भारत में GCC की सफलता एक सुव्यवस्थित रणनीति का परिणाम:

- GCC का तेजी से बढ़ना भारत के व्यापार-अनुकूल वातावरण को प्रदर्शित करता है। कारोबारी सुगमता, मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसी पहल GCC की जरूरतों के साथ पूरी तरह से तालमेल रखती हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

कारोबारी सुगमता:

- SPICe+ (इलेक्ट्रॉनिक रूप से कंपनी पंजीकरण के लिए सरलीकृत प्रोफॉर्मा+) की शुरुआत ने कंपनी के पंजीकरण की प्रक्रिया को आसान बना दिया है।
- 2024 में, जन विश्वास अधिनियम की शुरुआत ने अनुपालन संबंधी अत्यधिक बोझ को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अधिनियम ने उद्यमियों के लिए नियमों को सरल बनाकर व्यापार-अनुकूल वातावरण को और भी अधिक बढ़ावा मिला।

मेक इन इंडिया पहल:

- GCC को भारत की प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) नीतियों से लाभ मिला है, जो कई क्षेत्रों में शत-प्रतिशत विदेशी स्वामित्व को स्वतंत्र रूप से निवेश करने और संचालन करने की अनुमति देता है।
- विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZ) और प्रौद्योगिकी पार्कों की स्थापना ने कंपनियों को कर छूट से लाभ उठाने की अनुमति दी है, जैसे कि पहले पांच वर्षों के लिए निर्यात लाभ पर शत-प्रतिशत आयकर छूट, जिससे लागत में अधिक से अधिक कमी हो रही है।

स्किल इंडिया डिजिटल पहल:

- स्किल इंडिया डिजिटल को 2023 में केंद्र और राज्य के संयुक्त प्रयासों के समन्वय के लिए प्रस्तुत किया गया था। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि भारतीय युवाओं को भविष्य के लिए तैयार किए जाने वाले कौशल प्रदान किए जाएं।
- डिजिटल कौशल में प्रशिक्षण को उन्नत करने के लिए निजी संगठनों और उच्च शिक्षा संस्थानों के साथ साझेदारी। AI इकोसिस्टम को उन्नत करने के लिए मंत्रालय स्तर पर कार्य किया गया। नियामक छूट, प्रोत्साहन और प्रचुर कुशल कार्यबल के इस संयोजन ने भारत को प्रतिस्पर्धियों के खेल में आगे रहने में सक्षम बनाया है।

भारत मूल्य वितरण के लिए पसंदीदा स्थल:

- वर्तमान में GCC का प्रतिस्पर्धात्मक लाभ भारत में अधिक स्पष्ट रहा है। वे मूल्य श्रृंखला में आगे बढ़ने की क्षमता रखते हैं और तेजी से नवाचार केंद्रों और उत्कृष्टता केंद्रों (COE) में परिवर्तित हो रहे हैं, जो अनुसंधान एवं विकास और बौद्धिक संपदा के निर्माण जैसे उच्च-मूल्य वाले कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- भारत में अब GCC लागत केंद्रों से लाभ केंद्रों में परिवर्तित हो रहे हैं।

रणनीतिक भौगोलिक विस्तार का सुगम होना:

- अहमदाबाद, कोच्चि, विशाखपट्टणम, जयपुर और कोयंबटूर जैसे कई टियर 2 और 3 शहर, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए अपने GCC स्थापित करने के क्रम में आदर्श गंतव्य के रूप में उभरे हैं।
- इन शहरों ने विश्व भर की कंपनियों के लिए परिचालन की लागत को घटाने से जुड़ी आवश्यकताओं को पूरा किया। गुणवत्तापूर्ण, विविध टैलेंट पूल का लाभ उठाने के अवसर ने और अधिक लाभ जोड़े।
- यह दोनों पक्षों के लिए लाभदायक स्थिति थी।

भारत इस प्रतियोगिता में अन्य प्रतिस्पर्धी देशों से आगे:

- भारत इस प्रतियोगिता में मलेशिया, वियतनाम और फिलीपींस जैसे अनेक देशों से आगे है, क्योंकिः
  - ➢ भारत एक मजबूत और परिपूर्ण GCC इकोसिस्टम के बल पर आगे है, जबकि मलेशिया, वियतनाम और फिलीपींस अभी भी विकास के विभिन्न चरणों में हैं।
  - ➢ उल्लेखनीय है कि उच्च गति वाले इंटरनेट और कार्यालय के अत्याधुनिक स्थानों सहित उन्नत भौतिक और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ, भारत GCC की

जरूरतों को पूरा करने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित है। जबकि मलेशिया और वियतनाम का एकमात्र लाभ प्रतिस्पर्धी श्रम लागत तक सीमित है। वहीं फिलीपींस BPO सेवाएं प्रदान करने से ऊपर नहीं उठ पाया है।

आगे का रास्ता:

- इस उछाल ने रियल एस्टेट, हॉस्पिटैलिटी, खुदरा और परिवहन के क्षेत्र में वृद्धि को बढ़ावा दिया है। इससे ये क्षेत्र व्यापार के समृद्ध केंद्रों में परिणत हो गए हैं।
- स्टार्टअप, विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोग ने GCC को स्थानीय इकोसिस्टम में और अधिक एकीकृत किया है, जिससे नवाचार और सामंजस्यपूर्ण संचालन को बढ़ावा मिला है।
- प्रतिभा की उपलब्धता, लागत लाभ और एक समर्थक इकोसिस्टम द्वारा संचालित तेजी से स्थापित होने वाली दर ने इसके प्रभुत्व को सशक्त किया।